# जिसके दिल में प्यार, वही समझ सकता है

**EXHIBITION** शुक्रवार को पंजाब कला भवन में शुरू हुई सिटी बेस्ड आर्टिस्ट और पोएट सुरेश बृज सुरूर की एक अनोखी एग्जिबीशन का। यह 13 दिसंबर तक चलेगी।

सिटी रिपोर्टर ▶

इमेजिन कीजिए आप दीवार पर सजी एक पेंटिंग देखकर उसे समझने की कोशिश ही कर रहे हैं। इतने में एक शख्स एक कविता, 'कुछ खत कुछ गीत मेरे पास हैं सभी, तेरे लिए ही मैंने लिखे थे जो कभी' सुनाकर आपको उस पेंटिंग के पूरे मायने समझा देता है। फिर आप एक के बाद जैसे ही सभी पेंटिंग्स की ओर बढ़ते हैं, तो वह शख्स आपको इसी तरह कविताएं सुनाकर सभी पेंटिंग्स के मायने समझा देता है। निश्चय ही यह एक्सपीरियंस हर देखने वाले के लिए अद्भुत और मजेदार होगा। यहां बात हो रही है शुक्रवार को पंजाब कला भवन में शुरू हुई एक अनोखी एग्जिबीशन की। यहां लगी 150 आर्ट वर्क्स में इलस्ट्रेशंस भी हैं और फोटोग्राफी भी। आर्टिस्ट और पोएट हैं सुरेश बृज सूरूर। इसका उद्घाटन एडवाइजर विजय कुमार देव ने किया। यह 13 दिसंबर तक चलेगी।

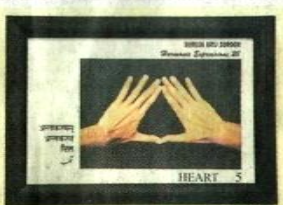

सुरेश डिफेंस अकाउंट्स डिपार्टमेंट से अकाउंट्स ऑफिसर के तौर पर रिटायर हुए हैं। साहित्य की सेवा करने और समाज को कुछ देने के मकसद से इन्होंने 2008 में वॉलंटरी रिटायरमेंट ली थी। उन्होंने बताया कि वह 13 साल की उम्र से कविताएं लिख रहे हैं और बचपन से ही पेंटिंग भी कर रहे हैं। उनके पिता बृज बिहारी लाल एक आर्टिस्ट थे। उन्हें देखकर वे भी आर्टिस्ट बन गए। इसलिए अपनी इस एग्जिबीशन को उन्होंने अपने स्वर्गीय पिता को डेडिकेट किया है। सुरेश के मुताबिक एग्जिबीशन में उन्होंने अपनी सुंदर भावनाओं और गहरे विचारों को जगह दी है। इसलिए एग्जिबीशन की शुरुआत में भी यही लिखा है कि जिसके दिल में प्यार है, वही इसे समझ सकता है।

## यह कहती है एग्जिबीशन

एग्जिबीशन को तीन भागों में बांटा गया है। इसमें एब्स्ट्रेक्ट आर्ट में इलस्ट्रेशंस, 'पोएटिकल एक्सप्रेशंस 97', हाथों के जेस्चर के माध्यम से एक कैरेक्टर का वर्णन, 'हार्मोनिक एक्सप्रेशंस' और 'स्टोन-16' शामिल हैं। सभी भागों में सुरेश ने अपनी इमेजिनेशन को बयां करने की कोशिश की है।

**पोएटिकल एक्सप्रेशंस 97:** इसमें सुरेश ने खुद की बनाई इलस्ट्रेशंस को जगह दी है। यह आइडिया कैसे आया इस पर उन्होंने बताया कि जब उन्होंने अपनी लिखी कविता का पहला प्रिंटआउट लिया तो चार शेरों के बाद नीचे काफी जगह खाली रह गई, जिसे देखकर सोचा क्यों न इसपर एक तस्वीर बनाई जाए। इसके बाद उन्होंने ऐसी कई तस्वीरें बनाईं। इन तस्वीरों में सुरेश ने वह सब कहने की कोशिश की है जिसे वह अपनी कविताओं में नहीं कह पाए। इन इलस्ट्रेशंस को उन्होंने अपनी कविताओं की किताब, ख्वाब-ओ-ख्याल में शामिल कविताओं के आधार पर तैयार किया है।

**हार्मोनिक एक्सप्रेशंस:** जैसे संगीत में एक सुर से दूसरे सुर पर एक ताल में आवाज जाती है। सुरेश के मुताबिक हाथों की चाल भी हार्मोनियम की तरह है। इस सेक्शन में उन्होंने हाथों की खूबसूरती को एक मायना दिया है। इसमें उन्होंने अपने हाथों के अलग-अलग एक्सप्रेशंस, स्वागतम, अंकुरण, खिलना और दिल आदि को खुद ही कैमरे में कैद किया है। हर फोटो को एक शब्द में सुरेश ने पांच भाषाओं संस्कृत, हिंदी, पंजाबी, उर्दू और अंग्रेजी में कैप्शन दिया है।

**स्टोन 16:** सुरेश ने बताया कि एक बार वह एक पेड़ के नीचे पड़े एक पत्थर से मिले। पत्थर देखकर उन्हें लगा कि यह पत्थर उन्हें कुछ कहना चाहता है। इसके बाद उन्होंने 16 अलग-अलग एंगल से इस पत्थर की तस्वीर क्लिक की। उन्हीं तस्वीरों को सुरेश ने यहां डिसप्ले किया है। किसी तस्वीर में यह पत्थर एक हाथी के सिर जैसा लगता है तो किसी में स्टार फिश जैसा।

Dainik Bhaskar, Chandigarh. 12th December, 2015.

# Exhibition on abstract art opens at Punjab Kala Bhavan

UT adviser Vijay Dev and former city mayor Harjinder Kaur during the opening ceremony of a painting exhibition at Punjab Kala Bhawan at Sector 16, Chandigarh, on Friday. RAVI KUMAR/HT

SD Sharma
chandigarh@hindustantimes.com

**CHANDIGARH:** An exhibition comprising 97 illustrations in abstract art titled 'Poetical Expressions 97' put up by city-based artist Suresh Brij Suroor was inaugurated by UT adviser Vijay Dev at the Shobha Singh Art Gallery, Punjab Kala Bhawan, Sector 16, on Friday.

Besides, photographic slide prints captioned as 'Harmonic Expressions 28' and 'Stone 16' were also displayed.

The exhibits in black and white, through pen and ink, based on imaginations and experiences, were a unique amalgamation of visual art and poetry.

**EXHIBITS IN BLACK AND WHITE, BASED ON IMAGINATION AND EXPERIENCES, WERE A AMALGAMATION OF VISUAL ART AND POETRY**

In the end, a few more expressions on miscellaneous thoughts like bravery, happiness, patriotism, solitude, hope and aspiration exhibited versatility, literary elegance and social activism of the artist, who dedicated the project to the memory of his father and mentor Brij Bihari Lal, extolled as the Mater of portraits.

Artist poet Suresh Suroor delighted the visitors by explaining each work of art with related poetic couplet, which inspired him to translate his poetry in the spectacles of visual art.

The exhibition is open till December 13.



Hindustan Times, Chandigarh 12th December, 2015.

ZONE

Tribune LIFE+STYLE
CHANDIGARH | SUNDAY | 13 DECEMBER 2015

PHOTO: MANOJ MAHAJAN

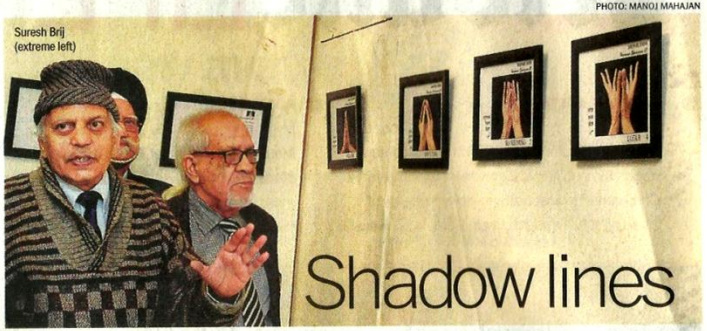


# Shadow lines

Poetical Expressions 97, an exhibition by Suresh Brij Suroor, depicts his passion for detail

AMARJOT KAUR

Though it's terribly hard to harbour one single definition of art, in an attempt to understand it, the privilege that most art allows at hand is that it is open to interpretations, perceptions and you are free to like it or not like it. Perhaps that merits the true calibre of any artist- the ability to put themselves out in the open for others to make whatever they can make out of it! As Suresh Brij Suroor exhibits his photographs and illustrations at Sobha Singh Art Gallery, Punjab Kala Bhawan, he leaves to your disposal an array of thoughts that seem to zoom in on regular things and occurrences of daily life, while defining them with a detailed perspective.

A self-proclaimed actor, director, translator and photographer, Suroor's illustrations in pen and ink exude his passion for detail. While in most of his paintings, he attempts at figurative abstract, leaving much to the imagination and perception of the onlooker, at times his subjects find themselves caught in geometrical dimensions. While on other occasions they carefully tend to dissolve in the picturesque landscapes offered to them. "Even a dot in these illustrations has been made after a lot of thinking," shares Suroor.

He also attempts at making hand gestures while expressing 'Harmonic Expressions' through hand movements to express repose, versatility, melody, vision, intimacy, romance and shelter. However, what we found quite interesting were his photography escapades, where Suroor spots a stone and shoots it from every angle creating a dialogue between light and shadow through images he discovers in the stone. In some close up shots, Suroor spots a bull, in others, he spots an elephant, while in other shots he spots an image of a cub and a lion, showing them moving away and towards each other with a play of light and shadows.

*(The exhibition is on till Dec 13, 2015)*

amarjot@tribunemail.com

The Sunday Tribune, Chandigarh 13th December, 2015